मुहम्मद को संबोधति कुरआन की भवष्यिवाणयिां

रेटगि:

ववरिण:

श्रेणी: लेख पैगंबर मुहम्मद उनकी पैगंबरी के सबूत

श्रेणी: लेख सबूत इस्लाम सत्य है मुहम्मद की पैगंबरी के सबूत

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

मक्का की भव्य मस्जदि (अल-मस्जदि अल-हरम) में प्रवेश करना

छठे वर्ष में जब पैगंबर को मक्का से मदीना प्रवास करने के लिए मजबूर किया गया था, उसने खुद को मक्का जाते और तीर्थ यात्रा करते देखा इसका वर्णन कुरआन में है:

"निश्चय ईश्वर ने अपने दूत को सच्चा सपना दिखाया, सच के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जदि हराम में, यदि ईश्वर ने चाहा, निर्भय होकर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाते हुए[1], तुम्हें किसी प्रकार का भय नहीं होगा, वह जानता है जिसे तुम नहीं जानते। इसलिए प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जदि हराम में प्रवेश) से पहले, एक समीप (जल्दी) की विजय। " (कुरआन 48:27)

ईश्वर ने तीन वादे किए:

(a) मुहम्मद मक्का की भव्य मस्जदि में प्रवेश करेंगे।

(b) मुहम्मद सुरक्षा की स्थिति में प्रवेश करेंगे।

(c) मुहम्मद और उनके साथियों को तीर्थयात्रा करने और उसके अनुष्ठानों को पूरा करेंगे।

मक्का की शत्रुता को नजरअंदाज करते हुए, पैगंबर मुहम्मद ने अपने साथियों को इकट्ठा किया और मक्का की शांतिपूर्ण यात्रा पर निकल पड़े। लेकिन मक्का के लोग शत्रुतापूर्ण बने रहे और उन्हें मदीना लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनका सपना अधूरा रह गया; हालाँकि, पैगंबर और मक्का के बीच एक महत्वपूर्ण संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे, जो काफी अहम साबित हुआ। इसी संधि के कारण पैगंबर मुहम्मद ने अगले वर्ष अपने साथियों के साथ अपनी शांतिपूर्ण तीर्थयात्रा पूरा किया। दृष्टि ने अपनी पूर्ति पाया था।[2]

कुरआन की भविष्यवाणी; 'अविश्वासी हारेंगे'

मक्का में मूर्तिपूजकों के हाथों मुसलमानों (विश्वासियों) को गंभीर उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा। एक समय में उनको तीन साल तक बहिष्कार किया गया था, और भोजन की निरंतर कमी कभी-कभी अकाल ले लेती थी।[3] उस समय जीत की कोई भी बात अकल्पनीय थी। सभी बाधाओं के बावजूद, ईश्वर ने मक्का में भविष्यवाणी की:

बुतपरस्तों की हार होगी और वे पीठ दिखाकर भाग जाएंगे!." (कुरआन 54:45)

अरबी क्रिया *???????* से पहले *??* (भविष्य काल को दर्शाने वाला एक अरबी उपसर्ग) है, जिससे यह भविष्य में पूरी होने की प्रतीक्षा में एक अलग भविष्यवाणी है और इसलिए पैगंबर के मक्का से मदीना प्रवास करने के दो साल बाद रमजान के पवित्र महीने में लड़ी गई बद्र की लड़ाई में मक्का वाले हार गए और पीछे हटने के लिए मजबूर हो गए।[4] पैगंबर के बाद मुसलमानों के दूसरे खलीफा उमर कहते थे कि उन्हें नहीं पता था कि कुरआन की भविष्यवाणी तब तक कैसे पूरी होगी जब तक कि वे खुद बद्र की प्रसिद्ध लड़ाई में इसे सच होते नहीं देख लेते! (सहीह अल-बुखारी)

कुरआन की भविष्यवाणी; 'विश्वासियों को मिलेगा राजनीतिक अधिकार'

मक्का वासीयों के हाथों घोर अत्याचार के बावजूद मुसलमानों को ईश्वर की ओर से खुशखबरी दी गई:

"ईश्वर ने उन लोगों से जो तुममें से ईमान लाए और उन्होने अच्छे कर्म किए, वादा किया है कि वह उन्हें धरती में अवश्य सत्ताधिकार प्रदान करेगा, जैसे उसने उनसे पहले के लोगों को सत्ताधिकार प्रदान किया था। और उनके लिए अवश्य उनके उस धर्म को जमाव प्रदान करेगा जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है। और निश्चय ही उनके वर्तमान भय के पश्चात उसे उनके लिए शान्ति और निश्चिन्तता में बदल देगा। वे मेरी बन्दगी करते है, मेरे साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाते। और जो

कोई इसके पश्चात इनकार करे, तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी है " (क़ुरआन 24:55)

सर्वशक्तिमान ईश्वर का ऐसा वादा मक्का में जिसकी कल्पना भी उस समय नही किया जा सकता था क्योंकि मुसलमान मक्का के बुरे लोगों से किया गया अत्याचार से दबे हुए थे लेकिन उसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने (पीड़ित, कमज़ोर मुसलमान के जरिए) पूरा कर दिखाया। वास्तव में, ईश्वर ने मुसलमानों को सुरक्षित बनाया और उस वादे को कुछ ही वर्षों में पूरा करके राजनीतिक अधिकार मुसलमानों को प्रदान किया।

"और पहले ही हमारा वचन हो चुका है अपने भेजे हुए भक्तों के लिए कि निश्चिय उन्हीं की सहायता की जायेगी।" (क़ुरआन 37:171-172)

सबसे पहले, मुसलमानों ने मदीना के लोगों के निमंत्रण से अपना राज्य स्थापित किया, जब ईश्वर ने आदेश दिया कि वे मक्का से मदीना चले गए। फिर, पैगंबर के जीवनकाल के भीतर, उस राज्य का विस्तार पूरे अरब प्रायद्वीप पर, अकाबा की खाड़ी और अरब की खाड़ी से लेकर दक्षिण में अरब सागर तक, उस स्थान सहित जहां से मुसलमानों को खदेड़ दिया गया था, उस पर अधिकार कर लिया (मक्का भी)। यह फरमान जारी था, मुस्लिम राजनीतिक और धार्मिक प्रभुत्व के विस्तार के लिए अरब प्रायद्वीप पर नहीं रुका। इतिहास एक जीवंत गवाही देता है कि इन छंदों द्वारा संबोधित मुसलमानों ने पूर्व फ़ारसी और रोमन साम्राज्यों की भूमि पर शासन किया, एक ऐसा विस्तार जिसने विश्व इतिहासकारों को चकित कर दिया। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के शब्दों में:

"मुहम्मद की मृत्यु के 12 वर्षों के भीतर, इस्लाम की सेनाओं ने सीरिया, इराक, फारस, आर्मेनिया, मिस्र और साइरेनिका (आधुनिक लीबिया में) पर कब्जा कर लिया।"[5]

पाखंडियों और बनू नाधीर की जनजाति के बारे में क़ुरआन की भविष्यवाणी

क़ुरआन में ईश्वर कहते हैं:

"यदि वे निकाले गए तो वे उनके साथ नहीं निकलेंगे और यदि उनसे युद्ध हुआ तो वे उनकी सहायता कदापि न करेंगे और यदि उनकी सहायता करें भी तो पीठ फेंर जाएँगे। फिर उन्हें कोई सहायता प्राप्त न होगी" (क़ुरआन 59:12)

पिछले

(क्योंकि) वास्तव में यदि उन्हें निकाल दिया जाता है तो वे उनके साथ बाहर नहीं जाते हैं, और यदि उन पर हमला किया जाता है तो वे उनकी मदद नहीं करते हैं, और वास्तव में यदि उन्होंने उनकी मदद की होती तो वे मुड़कर भाग जाते, और फिर वे विजयी नहीं होते।

"क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हो गये और कहते हैं अपने अह्ले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया, तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी और यदि तुमसे युध्द हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे तथा अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं। यदि वे निकाले गये तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे और यदि उनसे युध्द हो, तो वे उनकी सहायता नहीं करेंगे और यदि उनकी सहायता की (भी,) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर कहीं से कोई सहायता नहीं पायेंगे।" (कुरआन 59:11-12)

भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब बनू नाधीर को अगस्त 625 ईसवी में मदीना से निष्कासित कर दिया गया; पाखंडी (कपटी) उनके साथ नहीं गए या उनकी सहायता के लिए नहीं आए।[6]

भविष्य के टकरावों से संबंधित कुरआन की भविष्यवाणियां

"वे तुम्हें सताने के सिवा कोई हानि पहुँचा नहीं सकेंगे और यदि तुमसे युध्द करेंगे, तो वे तुम्हें पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिए जायेंगे।" (कुरआन 3:111)

"और यदि वे (मक्खन) जिन्होंने इनकार किया, वे तुमसे लड़ने वाले थे, तो वे निश्चित रूप से अपनी पीठ फेर लेंगे। फिर उन्हें कोई संरक्षक या सहायक नहीं मिलेगा।" (कुरआन 48:22)

ऐतिहासिक रूप से, इन आयतों के प्रकट होने के बाद, अरब प्रायद्वीप में अविश्वासी फिर कभी मुसलमानों का सामना करने में सक्षम नहीं थे।[7]

इन लेखों में चर्चा की गई भविष्यवाणियों से हम देखते हैं कि मुहम्मद पैगंबर के कई विरोधियों के दावे पूरी तरह से निराधार हैं। उन्होंने यह दिखाने के लिए चुनौती पर अपनी आलोचना आधारित की है कि मुहम्मद, ईश्वर की दया और आशीर्वाद उस पर सदा रहे, भविष्यवाणी की गई, यदि कुछ भी हो, और उनकी भविष्यवाणी के बारे में क्या सच हुआ।[8] प्रत्यक्ष रूप से, उन्होंने ईश्वर के मार्गदर्शन के साथ भविष्यवाणी की और प्रत्यक्ष रूप से, जो उन्हें हमें बताने के लिए निर्देशित किया गया था वह वास्तव में हुआ था। इसलिए, विरोधियों की कसौटी पर, मुहम्मद ईश्वर के दूत थे, और सुन्नत (उनके जीवन से कथन) और कुरआन के शब्द दोनों के द्वारा भेजे जाने वाले पैगंबरों में से अंतिम थे।

फुटनोट:

[1] हज के कुछ संस्कार।

[2] काजी सुलेमान मंसूरपुरी द्वारा 'मर्सी फॉर द वर्ल्ड्स' देखें, खंड 1, पृष्ठ 212 और 'मदीनन सोसाइटी एट द टाइम ऑफ द पैगंबर,' डॉ. अकरम दीया अल उमरी द्वारा, वॉल्यूम भाग 2, पृष्ठ 139

[3] मार्टनि लगिंस द्वारा 'मुहम्मद: हजि लाइफ बेस्ड ऑन द अर्लीस्ट सोर्सेज' पृष्ठ 89

[4] काजी सुलेमान मंसूरपुरी द्वारा 'दुनिया के लिए दया', वॉल्यूम 3 पृष्ट 299 'पैगंबर के समय में मदीना समाज', डॉ. अकरम दीया अल उमरी द्वारा, भाग 2, पृष्ठ 37

[5] "कला, इस्लामी।" एनसाइक्लोपीडिया ब्रटिानकिा एनसाइक्लोपीडिया ब्रटिानकिा प्रीमयिम सेवा से। (http://www.britannica.com/eb/article-13813)

[6] मार्टनि लगिंस द्वारा 'मुहम्मद: हजि लाइफ बेस्ड ऑन द अर्लीस्ट सोर्सेज', पृ. 204. काजी सुलेमान मंसूरपुरी द्वारा 'मर्सी फॉर द वर्ल्ड्स', भाग 3 पृष्ठ 302

[7] डॉ. थामरि घसियान द्वारा 'रसिाला खतमि अल-नबीयेन मुहम्मद'।

[8] तुम अपने मन में कह सकते हो, कजिो वचन यहोवा ने नहीं कहा उसे हम कैसे जाने? वह बात जो यहोवा ने नहीं कही है। पैगंबर ने इसे हठपूर्व कहा है; तुम उससे डरो मत। (द बाइबलि, न्यू अमेरकिन स्टैंडर्ड वर्जन, व्यवस्थावविरण 18:21-22)

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/384

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधकिार सुरक्षति हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधकिार सुरक्षति हैं।